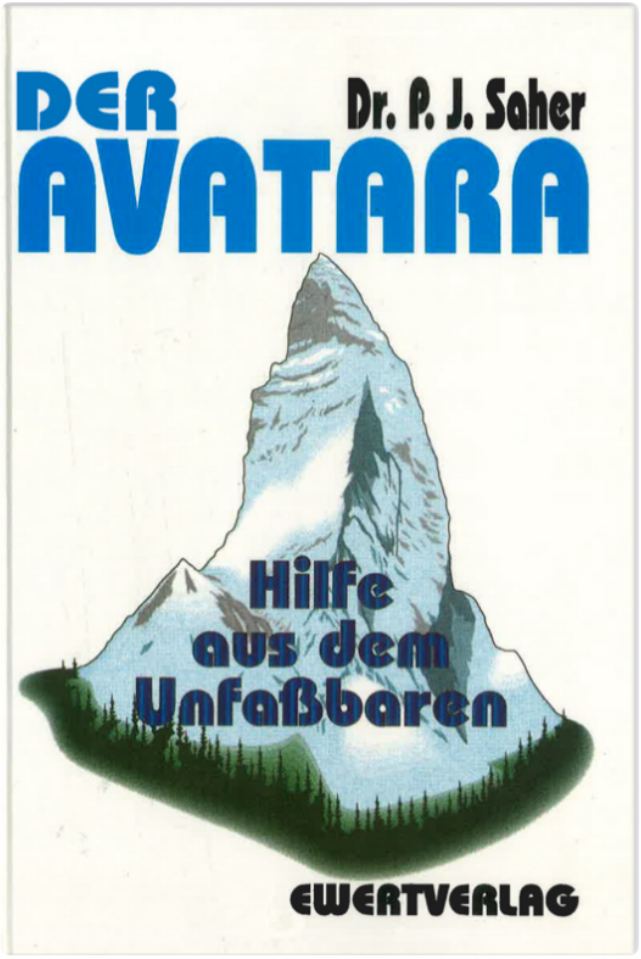

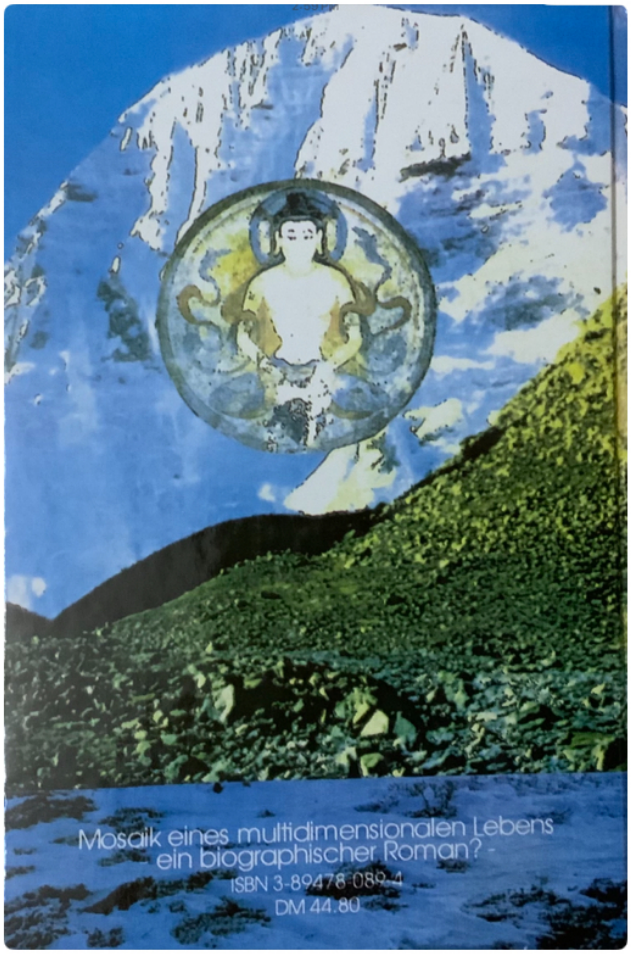

<u>गूगल नोटबुक एलएम द्वारा प्रस्तुत सारांश:</u>

🇮🇳🚩🇩🇪

डेर अवतार: एक बहुआयामी आध्यात्मिक यात्रा

यहां स्रोत डॉ. पी.जे. सहर की पुस्तक "DER AVATARA: Hilfe aus dem Unfaßbaren" से लिए गए अंशों का एक सेट प्रदान करते हैं, जिसका अनुवाद "अवतार: अगम्य से सहायता" के रूप में किया जा सकता है। यह पुस्तक "अवतार" की अवधारणा को आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से समझाती है, इसे "ईश्वरीय निर्णयों के वाइसरेगेंट और निष्पादक" के रूप में परिभाषित करती है। स्रोत डॉ. सहर के व्यक्तिगत अनुभवों और रहस्यमय घटनाओं पर प्रकाश डालते हैं, जिसमें एक गुरु का जीवन भी शामिल है जो भारत और जर्मनी के बीच आध्यात्मिक ज्ञान के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह पाठ आयुर्वेद, परामनोविज्ञान, और विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं के विषयों को एक बहुआयामी जीवन के मोज़ेक के रूप में खोजता है, और हीलिंग, ऊर्जा और ब्रह्मांड के साथ व्यक्तिगत संबंध जैसे सिद्धांतों की पड़ताल करता है।

डॉ. पी. जे. साहेर के कार्य का व्यापक दार्शनिक और वैज्ञानिक आधार क्या है?

डॉ. पी. जे. साहेर के कार्य का एक व्यापक दार्शनिक और वैज्ञानिक आधार है, जिसकी विशेषता पूर्वी ज्ञान और पश्चिमी विज्ञान का संश्लेषण है, जिसे अक्सर साइबरनेटिक ढांचे के माध्यम से लागू किया जाता है।
उनके कार्य के दार्शनिक और वैज्ञानिक आधार इस प्रकार हैं:

<u>दार्शनिक आधार:</u>

- **चिकित्सा का सार्वभौमिक दर्शन (साहेरसोफी/साहेरोलॉजी)**: उनका कार्य "चिकित्सा के सार्वभौमिक दर्शन" में निहित है। इसका उद्देश्य "आध्यात्मिक परिवर्तन" प्राप्त करना और "लोगो तथ्य" तक पहुंच बनाना है।
- **पूर्वी और पश्चिमी विचारों का एकीकरण**: उनके दृष्टिकोण का एक मुख्य पहलू "पूर्वी ज्ञान" (जैसे आयुर्वेद, योग, भारतीय दर्शन) को "पश्चिमी चिकित्सा" और वैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ जोड़ना है। उनकी अकादमिक पृष्ठभूमि में धार्मिक साहित्य, तत्वमीमांसा, दर्शनशास्त्र, भारतीय अध्ययन (इंडोलॉजी, अवेस्ता-संस्कृत समानांतर), कानून और राजनीति विज्ञान शामिल हैं, जो एक व्यापक बौद्धिक दायरे को दर्शाता है।
- **तत्वमीमांसा और गूढ़ विद्या**: उनका दर्शन तत्वमीमांसीय और गूढ़ अनुभवों का व्यापक रूप से अन्वेषण करता है, जीवन को "एक बहुआयामी जीवन का मोज़ेक" के रूप में देखता है। वह "ब्रह्मांडीय सार्वभौमिकता," "एकात्मक विश्व मॉडल," और "आकाशीय सार्वभौमिकता" जैसी अवधारणाओं में गहराई से उतरते हैं।
- **तत्वमीमांसीय ज्ञान का अनुप्रयोग**: उनका कार्य "व्यावहारिक जीवन में तत्वमीमांसीय ज्ञान को लागू करने की बिना शर्त मांगों" पर जोर देता है।
- **योग और आयुर्वेद**: उन्हें "योग और आयुर्वेद-चिकित्सक" और "महान योग गुरु" के रूप में पहचाना जाता है, जो इन प्राचीन भारतीय परंपराओं के साथ एक गहरा संबंध उजागर करता है। उनके दर्शन में "आत्म-एकीकरण के लिए रचनात्मक मनोचिकित्सा के रूप में ज़ेन-योग" शामिल है।
- **प्रमुख विचारकों का प्रभाव**: वह मार्टिन हाइडेगर और जीन गेबसर जैसे प्रमुख पश्चिमी विचारकों के दर्शन से जुड़ते हैं, और उनके कार्य में रवींद्रनाथ टैगोर और हरमन हेस जैसे आंकड़े भी संदर्भित और प्रभावित होते हैं।
- **ब्रह्मांडीय चेतना और विकास**: उनका कार्य "साहेरसोफिया थेओमैगिका" का उद्देश्य "ब्रह्मांडीय चेतना" को सक्षम करना है। उनके दार्शनिक प्रश्न "समकालीन दर्शनशास्त्र में ईश्वर और विकास की अवधारणाओं" को शामिल करते हैं।

<u>वैज्ञानिक आधार:</u>

- **साइबरनेटिक मेडिसिन**: डॉ. साहेर को उनकी "साइबरनेटिक कुल चिकित्सा" के लिए जाना जाता है, जिसे "कई वैज्ञानिक क्षेत्रों को जोड़ने वाली एक वैज्ञानिक अनुसंधान दिशा" के रूप में वर्णित किया गया है जो "विनियमन, सूचना प्रसारण और प्रसंस्करण की नियमितताओं" का अध्ययन करती है। इसे पूर्वी ज्ञान और पश्चिमी चिकित्सा का "साइबरनेटिक संयोजन" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- **गूढ़ ज्ञान का वैज्ञानिक सत्यापन**: वह सुझाव देते हैं कि प्राचीन "द्रष्टाओं" के पास "हमारे ब्रह्मांड के बारे में अप्रत्याशित तथ्य" थे, जिन्हें "उच्च तकनीक ने अब बड़े उपकरणों से पुष्टि की है"। इसका तात्पर्य गूढ़ या रहस्यमय अंतर्दृष्टि के लिए वैज्ञानिक पुष्टि खोजने का प्रयास है।
- **गहन मनोविज्ञान और रत्न अनुसंधान**: वह एक "गहन मनोवैज्ञानिक और रत्न शोधकर्ता" और "चिकित्सा अनुसंधान और फार्माकोलॉजी के लिए एक वैज्ञानिक सहयोगी" भी हैं। यह रत्नों के उपचार गुणों के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को इंगित करता है, उन्हें मनोविज्ञान और फार्माकोलॉजी से जोड़ता है।
- **अंतर-विषयक दृष्टिकोण**: उनका कार्य स्वाभाविक रूप से अंतर-विषयक है, जो दर्शनशास्त्र, धर्म, पारंपरिक चिकित्सा, मनोविज्ञान और विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों को जोड़ता है, जिसमें "ऊर्जा क्षेत्रों" और "मानव जीव" के बीच बातचीत पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

****

<u>सारांश</u>

डॉ. पी. जे. साहेर की पुस्तक "डेर अवतारा" का सारांश और उसके प्रमुख अवधारणाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं, जिसे एक नए पाठक के लिए भी समझना आसान होगा:

पुस्तक का नाम: डेर अवतारा (Der AVATARA) लेखक: डॉ. पी. जे. साहेर (Dr. phil. P. J. Saher) उपशीर्षक: "अगम्य से सहायता" (Hilfe aus dem Unfaßbaren) और "एक बहुआयामी जीवन का मोज़ेक" (Mosaik eines multidimensionalen Lebens)।

---

1. "अवतारा" का अर्थ और पुस्तक का परिचय:

• "अवतारा" संस्कृत के शब्द "अव" (ऊपर से नीचे आना) और "त्रि" (मनुष्य में रूप लेना, परिवर्तन) से बना है।

• इसका अर्थ है स्वर्ग से धरती पर उतरना और मनुष्य के भीतर रूप लेना, यानी रूप-परिवर्तन। बाद में, 'तारा' शब्द का उपयोग अक्सर देवी के अवतार के रूप में स्त्री के लिए किया गया।

• डॉ. साहेर के अनुसार, *अवतार या तारा एक उच्च प्राणी है जो कष्ट सहने वाली मानवता को प्रकाश तक पहुँचाने के लिए नश्वर शरीर में अवतार लेता है।*

• यह पुस्तक डॉ. पी. जे. साहेर की एक असाधारण और रहस्यवादी-गूढ़ जीवनी है, जो "एक जीवित अवतारा" के रूप में वर्णित की गई है।

2. पुस्तक का मुख्य उद्देश्य और दार्शनिक आधार:

• यह पुस्तक चिकित्सा के सार्वभौमिक दर्शन ("सार्वभौमिक उपचार दर्शन") का हिस्सा है। इसे साहेरसोफी (SAHERsophie) और साहेरोलॉजी (SAHERologie) भी कहा जाता है।

• इसका लक्ष्य आध्यात्मिक परिवर्तन प्राप्त करना और "लोगो तथ्य" (Logos Tatsache) तक पहुँचना है।

• पुस्तक पूर्वी ज्ञान (जैसे योग और आयुर्वेद) और पश्चिमी विज्ञान (जैसे साइबरनेटिक्स) का एक अनूठा संश्लेषण प्रस्तुत करती है। डॉ. साहेर को "योग और आयुर्वेद-चिकित्सक" और "महान योग गुरु" के रूप में जाना जाता है।

• उनका कार्य बहुआयामी जीवन के मोज़ेक का पता लगाता है, जिसमें ब्रह्मांडीय सार्वभौमिकता और एकल विश्व मॉडल जैसी अवधारणाएँ शामिल हैं।

3. वैज्ञानिक और गूढ़ पहलू:

• डॉ. साहेर "साइबरनेटिक कुल चिकित्सा" के प्रणेता हैं। साइबरनेटिक्स को एक वैज्ञानिक अनुसंधान दिशा के रूप में परिभाषित किया गया है जो "नियमन, सूचना संचरण और प्रसंस्करण की नियमितताओं" का अध्ययन करती है।

• पुस्तक का दावा है कि *प्राचीन "द्रष्टाओं" के पास ब्रह्मांड के बारे में "अप्रत्याशित तथ्य" थे, जिनकी पुष्टि अब "उच्च तकनीक" द्वारा की जा रही है।*

• पुस्तक में रत्न अनुसंधान का भी उल्लेख है, विशेष रूप से "हीलसिंग जेमस्टोन" (Heilbringende Edelsteine) के उपचार गुणों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिन्हें "इंस्टाएंट्रो" (INSTAYANTRO) कहा जाता है। इन रत्नों को मनोविज्ञान और फार्माकोलॉजी से जोड़ा गया है।

• यह जीवन को भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच एक सेतु के रूप में देखती है।

4. प्रमुख अवधारणाएँ और प्रभाव:

• पुस्तक में पूर्वी और पश्चिमी दर्शन के बीच संवाद है, जिसमें मार्टिन हाइडेगर और हरमन हेस जैसे विचारकों के उद्धरण और संदर्भ शामिल हैं।

• यह पारसी समुदाय के इतिहास और उनकी मुंबई में अनूठी सांस्कृतिक संश्लेषण पर प्रकाश डालती है। लेखक के गुरु का संबंध एक पारसी परिवार से था।

• पुस्तक में "मनुष्य के बेटे" (Menschensohn) और "ब्रह्मांडीय चेतना" जैसी अवधारणाओं का भी उल्लेख है, जिसका उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को सक्षम करना है।

• यह पुस्तक ऊर्जा क्षेत्रों और मानव जीव के बीच बातचीत पर केंद्रित है।

5. पुस्तक की संरचना और प्रमुख विषय (विषय-सूची से कुछ उदाहरण): पुस्तक कई अध्यायों में विभाजित है, जो विविध और रहस्यमय विषयों पर प्रकाश डालते हैं:

• अपरिचित आत्माओं के दायरे में (Im Reiche der unheimlichen Geister!)

• गोबी रेगिस्तान के रहस्य (Geheimnisse der Wüste Gobi)

• साइबरनेटिक कुल चिकित्सा (Cybernetische Total-Heilung)

• मगरमच्छों के साथ संचार समस्याएँ (Kommunikationsprobleme mit Krokodilen)

• जानलेवा संगीत वाद्ययंत्र (Das mordende Musikinstrument)

• सत्य से बढ़कर कुछ भी चमत्कारिक नहीं (Nichts ist wundersamer als die Wahrheit)

• कुंडलिनी के साथ चक्रों के माध्यम से (Mit der Kundalini durch die Chakras)

• एक दानव का रूपांतरण (Die Bekehrung eines Ungeheuers)

6. <u>समर्पण</u>:

यह पुस्तक श्री एस. एन. तावरिया को समर्पित है, जो 28 मई 1994 को दिवंगत हुए एक महान योगगुरु थे। वह लेखक के अंकल और उनके बचपन के शिक्षक भी थे।

संक्षेप में, *"डेर अवतारा" डॉ. पी. जे. साहेर के जीवन की एक जीवनी है जो पूर्वी आध्यात्मिकता और पश्चिमी विज्ञान को एक साथ लाने का प्रयास करती है, ब्रह्मांड के रहस्यों, मानव चेतना और उपचार की सार्वभौमिक संभावनाओं की पड़ताल करती है।*

****

<u>इस पुस्तक में अवतार कौन है?</u>

स्रोतों में दी गई जानकारी के आधार पर, यह संकेत मिलता है कि **लेखक डॉ. पी. जे. साहर स्वयं को एक अवतार के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।**

यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं जो इस बात का समर्थन करते हैं:

• पुस्तक को "एक जीवित अवतार की आत्मकथात्मक जीवनी" (autobiographical biography of a living Avatar) के रूप में वर्णित किया गया है।

• पुस्तक के बारे में बताते हुए, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि डॉ. पी. जे. साहर "एक अत्यंत असामान्य - फिर भी भयानक नहीं - रहस्यवादी गुरु (=अवतार)" (mystical master (= Avatar)) हैं।

• यह भी उल्लेख किया गया है कि डॉ. पी. जे. साहर एक आयुर्वेद-चिकित्सक (Ayurveda-Heilpraktiker) हैं, जो डॉर्टमुंड में कार्यरत हैं।

• स्रोत में एक "अवतार-जैसा गुरु" (AVATARA-ähnlicher Meister) का उल्लेख है, और इसके साथ लगे फुटनोट में स्पष्ट किया गया है कि "इस मामले में एक आयुर्वेद-हीलर भी है, जो अभी भी जीवित है और यहां रुहर क्षेत्र में चिकित्सक के रूप में काम करता है"। यह विवरण सीधे लेखक डॉ. पी. जे. साहर से संबंधित है, जैसा कि स्रोत में उनकी पहचान दी गई है।

इसलिए, इन बिंदुओं के आधार पर, पुस्तक में डॉ. पी. जे. साहर को ही उस "जीवित अवतार" के रूप में दर्शाया गया है जिसकी आत्मकथात्मक जीवनी यह पुस्तक है।

****

<u>श्री तावरीया का लेखक पी. जे. साहर के शिक्षा दीक्षा में क्या योगदान था?</u>

श्री एस.एन. तावारिया का लेखक डॉ. पी. जे. साहर की शिक्षा और उनके स्वयं को एक अवतार के रूप में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण योगदान था। स्रोतों और हमारी पिछली बातचीत से प्राप्त जानकारी के आधार पर, उनके योगदान को निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं में समझा जा सकता है:

• **बचपन में गुरु और शिक्षक**: श्री एस.एन. तावरीया लेखक डॉ. पी. जे. साहर के मामा (चाचा) थे, और वे बचपन में उनके शिक्षक भी थे। श्री एस.एन. तावरीया द्वारा डॉ. पी. जे. साहर को दी गई प्रारंभिक और मूलभूत शिक्षा उनके आध्यात्मिक विकास की नींव बनी।

• **महान योगी (ग्रोस-योगा-मास्टर)**: श्री एस.एन. तावारिया को "ग्रोसयोगामास्टर" (महान योगी) के रूप में संदर्भित किया गया है। यह उपाधि उनके गहरे आध्यात्मिक प्रभाव और ज्ञान को दर्शाती है। पुस्तक के शुरुआती पृष्ठों में उन्हें "ग्रोसयोगामास्टर की एक ज्योति" (a lamp of the Great Yogamaster) के रूप में भी वर्णित किया गया है, जो साहर के आध्यात्मिक मार्ग को रोशन करने में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

• **गुप्त एशियाई ज्ञान तक पहुँच**: श्री तावारिया के माध्यम से, डॉ. पी. जे. साहर को "एशिया की छिपी हुई बुद्धि के **अत्यंत गुप्त ग्रंथों**" (strictly secret texts of the hidden wisdom of Asia) तक पहुँच प्राप्त हुई। यह साहर के रहस्यवादी और आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, जो अंततः उन्हें स्वयं को एक अवतार के रूप में प्रस्तुत करने में सहायक हुआ। यह ज्ञान उनके दावे के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान करता है।

• "महान व्यक्ति" (प्रेमा) के मामा: श्री तावारिया को "महान व्यक्ति" (Exalted One) के मामा के रूप में भी उल्लेख किया गया है। चूंकि *पुस्तक में 'प्रेमा' को डॉ. पी. जे. साहर का ही एक पहलू या "अवतार-जैसा गुरु" (AVATARA-ähnlicher

Meister) माना जाता है*, यह पारिवारिक और आध्यात्मिक संबंध साहर के स्वयं के "जीवित अवतार" के रूप में प्रस्तुति को और अधिक गहरा करता है।

• **पुस्तक का समर्पण**: पुस्तक **श्री एस.एन. तावारिया की स्मृति को समर्पित है, जो लेखक के जीवन और आध्यात्मिक यात्रा में उनकी असाधारण भूमिका को उजागर करता है**। "अवतार" की अवधारणा, जिसे पुस्तक में "देवता के निर्णयों के निष्पादक के रूप में वायसराय" (the viceregent as executor of divine decrees) के रूप में परिभाषित किया गया है, को समझने में तावारिया का ज्ञान और शिक्षा निर्णायक थी।

****
****

<u>पुस्तक का सारांश पुनः प्रस्तुत है-</u>

डॉ. पी.जे. सहर द्वारा 'डेर अवतार' और श्री एस.एन. तवरिया के संदर्भ में :

1. **परिचय: 'डेर अवतार' पुस्तक का अवलोकन**

'डेर अवतार' (यानी 'अवतार') डॉ. पी.जे. सहर द्वारा लिखित एक पुस्तक है, जिसका शीर्षक उपशीर्षक "हिल्फे ऑस डेम अनफासबारेन" (अगम्य से मदद) और "मोज़ेक आइनिस मल्टीडाइमेंशनलिन लेबेंस" (एक बहुआयामी जीवन का मोज़ेक) के साथ है। पुस्तक को मूल रूप से जर्मन में लिखा गया एक "नोवम इन डेर वेल्टलिटरेचर" (विश्व साहित्य में एक उपन्यास) के रूप में वर्णित किया गया है, जो एक "अत्यंत असामान्य - रहस्यवादी-अचरज भरा" - आत्मकथात्मक जीवनी प्रस्तुत करता है।

2. **अवतार की अवधारणा**

पुस्तक के अनुसार, 'अवतार' शब्द संस्कृत के 'अवतार' से आया है, जो 'अव' (ऊपर से नीचे आना) और 'त्र' (मानवता में आकार लेना/रूपांतरित होना) से बना है। इसे एक "उच्च प्राणी" के रूप में परिभाषित किया गया है, चाहे वह पुरुष हो (अवतार) या महिला (तारा), जो "दुःखद मानवता को प्रकाश में लाने में मदद करने के लिए" एक नश्वर शरीर में अवतार लेते हैं, "दया और करुणा से"। 'अवतार' को "गॉटर्रात्स्क्लुसेन के उप-प्रमुख के रूप में वर्णित किया गया है।"

3. **श्री एस.एन. तवरिया के लिए समर्पण**

पुस्तक 28 मई 1994 को दिवंगत हुए "महान योगी" (ग्रोस योगा मास्टर) श्री एस.एन. तवरिया को समर्पित है। उन्हें लेखक का "चाचा" और उनके बचपन के शिक्षक के रूप में वर्णित किया गया है। समर्पण बताता है कि तावरीया ने पश्चिम में, विशेष रूप से जर्मनी में, कई "प्यारे दोस्तों" को पीछे छोड़ दिया, और उनकी पुस्तक "सांत्वना का स्थायी संकेत और मृत्यु पर विजय पाने वाली दोस्ती का संकेत" है। समर्पण में बुद्ध का एक उद्धरण भी शामिल है: "यह मत कहो, ओ आनंद, कि अच्छा दोस्त केवल आधी राह है; वह पूरी राह है।"

4. **पुस्तक के विषय और सामग्री**

पुस्तक विभिन्न गूढ़ और आध्यात्मिक विषयों की पड़ताल करती है, जैसा कि इसकी सामग्री तालिका से स्पष्ट है:

पुनर्जन्म (Re-inkarniert): यह अवधारणा कि जीवनकाल एक "परंपरागत रूप से-जीवनी संबंधी" पहलू और एक "आध्यात्मिक-भौतिक" पहलू के बीच विभाजित होता है।

भारतीय रहस्यवाद: पुस्तक में भारत, विशेष रूप से बॉम्बे और भारतीय जंगल में अनुभव शामिल हैं। यह बॉम्बे को "पंचगनी" (पांच अग्नि) के साथ जोड़ता है और कहता है कि इसमें लेखक के "रहस्यवादी-जादुई" अनुभव हुए थे।

रहस्यवादी अनुभव और वास्तविकता: पुस्तक "असामान्य" और "रहस्यवादी-अचरज भरे" अनुभवों पर केंद्रित है, जिसमें "संवेदना-जादूगर" और "रहस्यवादी घटनाएं" शामिल हैं। यह बताता है कि इस पुस्तक में "असाधारण घटनाओं" को "प्राप्त अनुभव की प्रामाणिकता" के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आध्यात्मिक विकास और ज्ञान: पुस्तक ज्ञान प्राप्त करने और "आध्यात्मिक" घटनाओं की व्याख्या करने पर जोर देती है। यह "सहज ज्ञान" और "अचेतन" के महत्व पर प्रकाश डालता है।

चक्रों के माध्यम से कुंडलिनी: पुस्तक कुंडलिनी योग की अवधारणा की पड़ताल करती है, जिसमें "ऊर्जा को पुनरुत्पादित करने, खुद को विकसित करने और इच्छाओं को पूरा करने के लिए" कुंडलिनी को ऊपर उठाना शामिल है। यह सात चक्रों के माध्यम से कुंडलिनी को ऊपर उठाने की प्रक्रिया का वर्णन करता है, जिसमें पहला चक्र "बेसिस्पंकट" (मूल बिंदु) और सातवां "ब्रह्मरंध्र" (ब्रह्म का द्वार) है।

हीलिंग और रत्न: पुस्तक विभिन्न प्रकार के रत्नों को "ठीक करने वाले रत्न" (हेलब्रिंगेंडे एडेलस्टीन) के रूप में चर्चा करती है, जो उनके हीलिंग गुणों के साथ-साथ आयुर्वेदिक और गूढ़ दृष्टिकोणों से भी हैं।
समय और स्थान का बहुआयामी दृष्टिकोण: पुस्तक "बहुआयामी ज्यामिति" की अवधारणा की पड़ताल करती है, विशेष रूप से "बरमूडा त्रिकोण" के संदर्भ में। यह सुझाव देता है कि "एंटीमटेरी कैन बी मटेरी इन अ रिवर्स टाइम-फ्लो" (एंटीमटेरिया एक उल्टे समय प्रवाह में पदार्थ हो सकता है) और "द सेम प्रोसेस दैट क्रिएट्स ब्लैक होल्स क्रिएट्स व्हाइट होल्स, बट द डायरेक्शन ऑफ टाइम इज रिवर्सड!" (वही प्रक्रिया जो ब्लैक होल बनाती है, सफेद छेद बनाती है, लेकिन समय की दिशा उलट जाती है!)
5. **प्रमुख विचार और तथ्य**
डॉ. पी.जे. सहर: लेखक को "दार्शनिक, आयुर्वेद-हीलर, और पीएचडी" के रूप में वर्णित किया गया है। पुस्तक उनकी जीवन की "अत्यंत असामान्य - रहस्यवादी-अचरज भरी" आत्मकथात्मक जीवनी है।
श्री एस.एन. तावरिया का प्रभाव: तावरीया को लेखक का गुरु और परिवार का सदस्य माना जाता है, जिन्होंने लेखक के बचपन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और पुस्तक उन्हें श्रद्धांजलि है।
अवतार का उद्देश्य: *अवतार का प्राथमिक उद्देश्य "दुःखद मानवता को प्रकाश में लाने में मदद करना" है।*
बहुसांस्कृतिक और अंतर्धार्मिक परिप्रेक्ष्य: पुस्तक विभिन्न धार्मिक और गूढ़ विचारों को समझने के लिए एक "बहुसांस्कृतिक समुदाय" के रूप में धर्म का वर्णन करती है।
विज्ञान और गूढ़वाद का एकीकरण: पुस्तक "वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए तथ्यों" को "गूढ़ अनुभवों" के साथ जोड़ने का प्रयास करती है, यह सुझाव देती है कि "ज्ञान को बढ़ाना" ही आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका है।
"इंस्टेंट्रो" की अवधारणा: पुस्तक "इंस्टेंट्रो" को एक "बहुआयामी ज्यामिति" और "कला-कलात्मक स्वास्थ्य" के रूप में संदर्भित करती है, जो "ऊर्जा के स्तर को बढ़ा सकती है" और "वास्तविकताओं" को प्रभावित कर सकती है। इसे "सभी में अंतर्निहित" माना जाता है।
6. ***उद्धरण***
"डेर अवतार = डेर विजरेगेंट अलस वोल्स्ट्रेकर वॉन गॉटर्रात्स्क्लुसेन।" (अवतार = देवताओं के संकल्पों के उप-प्रमुख के रूप में)
"दास ड्यूटलीचे उंड लीच्टे ब्राउट इंडस दास डंकले उंड डेन शैटन, सोनस्ट गॉबे निस नॉट्स ज़ु वेरडेटलीचेन।" (स्पष्ट और प्रकाश को अंधेरे और छाया की आवश्यकता होती है, अन्यथा स्पष्ट करने के लिए कुछ भी नहीं होगा।) - हीडेगर
"सेज निक्थ, ओ आनंद, दास डेर ग्यूट फ्रुंड नूर डेर हाल्बे वेज ज़ुम हील इस्त; एर इस्ट डेर गान्ज़े वेज।" (यह मत कहो, ओ आनंद, कि अच्छा दोस्त केवल आधी राह है; वह पूरी राह है।) - बुद्ध
"दास बर्नेन्डे वुन्सच, डाई विर्कलिचकेट ज़ु स्टाइगरन... (ज़ेइग्ट), दास वीर स्टार्कर सिंध अलस सी; ... विर्कलिचकेट? डाई विर्कलिचकेट इस्ट नियमल्स जेनग, ज़ौबर टुट नॉट।" (जलती हुई इच्छा, वास्तविकता को बढ़ाने के लिए... (दिखाता है), कि हम उनसे अधिक मजबूत हैं; ... वास्तविकता? वास्तविकता कभी पर्याप्त नहीं होती, जादू की आवश्यकता नहीं होती।) - हरमन हेसे
"वेर गोल्डेन शेनक्ट, शेनक्ट (ऑच ओहने ज़ू विसेन) डाई लिबे; डेन गोल्ड इस्ट लिबेल।" (जो सोना देता है, वह देता है (बिना जाने भी) प्यार; क्योंकि सोना प्यारा है।) - पैरासेलसस
"वास सिंध डेन ज़ुलेट डें वारहाइटन डेस मेंशेन? एस सिंध डाई अनविडेरलेगबारे इरट्यूमर डेस मेंशेन।" (इंसान की सच्चाई अंततः क्या है? वे इंसान की अनैच्छिक त्रुटियां हैं।) - एफ. नीत्शे
"उंटेर डेम मेंशेन, डेर प्रेमा अस डेम फिल्मवेल्ट केन्नेंट, बेफंड सिच आइन हेर डेंट्रा, डर्च डेन एर वीडेरम मिट आइनम हल्बजाहेर इन कॉन्टाक्ट काम, डेर सिच अलस ग्रोसर ज़ेन-मास्टर एन्टपुप्ते।" (इंसानों में, वह प्रेमा जो फिल्म जगत को जानती थी, उसे एक मास्टर डेंट्रा मिला, जिससे वह आधे साल के लिए फिर से संपर्क में आई, जो एक महान ज़ेन-मास्टर बन गया।)
"विन मैन निक्ट वेर्स्टेह्ट, बेसिट्ज़्ट मैन निक्ट।" (जो समझ में नहीं आता, वह मालिक नहीं होता।) - गोएथे
7. **निष्कर्ष**
'डेर अवतार' एक बहुआयामी और गूढ़ कार्य है जो पाठक को आध्यात्मिक विकास, रहस्यवादी अनुभवों और भारतीय दर्शन के गहरे अध्ययन की यात्रा पर ले जाता है। यह विज्ञान और गूढ़वाद के बीच संबंध को पाटने का प्रयास करता है, और अवतार की अवधारणा, कुंडलिनी योग और रत्नों के उपचार गुणों पर प्रकाश डालता है। पुस्तक स्वयं एक "बहुआयामी जीवन का मोज़ेक" है, जैसा कि इसके उपशीर्षक में कहा गया है, जो एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है जो भौतिक दुनिया से परे है।

🪔🪷🌼🕉️☮️